सुखाड़िया विश्वविद्यालय एवं हिंदी विभाग

विभाग मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर की संघटक इकाई है। विश्वविद्यालय राज्य का पहला विश्वविद्यालय है, जिसको राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद् (नेक) ने 'ए' श्रेणी प्रदान की है। विभाग देश के पुराने और प्रतिष्ठित हिंदी विभागों में से एक है। हिंदी साहित्य के उन्नयन और प्रचार-प्रसार में इसकी निर्णायक भूमिका है। यह निरंतर सक्रिय विभाग है। संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और व्याख्यानों के माध्यम से इसने अपनी विशेष पहचान बनाई है।

अपनी स्थापना से ही विभाग, शिक्षण एवं अनुसंधान के क्षेत्र में उत्कृष्टता बनाए रखने के लिए प्रयासरत है। उच्च नैतिक मूल्यों, वैज्ञानिक सोच पैदा करने और उच्च शिक्षा के उभरते हुए क्षेत्रों के साथ तालमेल रखने की दिशा में भी विभाग संकल्पवान है। यह विभाग सूचना प्रौद्योगिकी का शिक्षा एवं शोध के स्तर पर अधिकतम उपयोग करने में अग्रणी है, साथ ही भौतिक आधारभूत सुविधाओं की दृष्टि से भी समृद्ध है।

श्री मेवाड़-वागड़-मालवा जनजाति विकास संस्थान, उदयपुर

श्री मेवाड़-वागड़-मालवा जनजाति विकास संस्थान, उदयपुर की स्थापना वर्ष 2012 की गई। यह एक पंजीकृत संस्था है। अपनी स्थापना से ही यह संस्था जनजातियों के विकास के लिए संकल्पबद्ध है। संस्थान जनजाति क्षेत्र में शिक्षा, रोजगार, स्वच्छता एवं कौशल विकास के साथ-साथ जनजातियों के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक उन्नयन की दिशा में प्रयासरत है। संस्थान द्वारा कला, संस्कृति एवं साहित्य के क्षेत्र में रचनात्मक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है। नारी जागरण, बालिका शिक्षा एवं पर्यावरण चेतना जागृति के लिए भी संस्थान संकल्पबद्ध है।

संस्थान द्वारा प्रतिभा प्रोत्साहन एवं सर्व समाज शिक्षकों के गौरव की पहचान हेतु तहसील, जिला एवं अंचल स्तरीय सम्मान समारोहों का आयोजन किया जाता है। आदिवासियों में राष्ट्रीय चेतना के स्वर्णिम प्रतीक मानगढ़ के शहीदों की स्मृति में काव्य गोष्ठी, विश्व आदिवासी दिवस पर चित्र प्रदर्शनी एवं महापुरुषों की जयंतियों का आयोजन भी संस्थान के नियमित कार्यक्रमों में शामिल है। समाज के अग्रणी जनों के निर्देशन में यह संस्था अपने विविध लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। श्री रघुवीर सिंह मीणा, पूर्व सांसद, उदयपुर संस्था के संस्थापक हैं। वर्तमान में यह संस्था श्री अर्जुन लाल मीणा (सांसद, उदयपुर) केंद्रीय संयोजक के कुशल निर्देशन में लोक कल्याण के पथ पर सतत अग्रसर है।

पंजीयन

- पंजीयन शुल्क : विद्यार्थी/शोधार्थी रु. 700, शिक्षक एवं अन्य रु. 1,000/-
- पंजीयन शुल्क विभाग में नकद जमा करवाया जा सकता है अथवा Head, Department of Hindi, M.L.Sukhadia University, Udaipur, Raj. के नाम से चेक या डी.डी. द्वारा भेजा जा सकता है अथवा सीधे ICICI Bank खाता संख्या 694201437677 IFSC Code – ICIC0006942 में भी जमा कराया जा सकता है।
- सीधे बैंक में राशि जमा कराने की स्थिति में बैंक रसीद पंजीयन प्रपत्र के साथ अवश्य भेजें।

अन्य जानकारियाँ

- पंजीयन की अंतिम तिथि 25 सितम्बर, 2016 निश्चित की गई है।
- पंजीयन की अंतिम तिथि के पश्चात आवास व्यवस्था प्रतिभागी को स्वयं अपने स्तर पर करनी होगी।
- संभागियों को किसी प्रकार का यात्रा-भत्ता आदि देय नहीं होगा।
- शोध पत्रों के प्रकाशन की योजना है अत: 10 सितम्बर, 2016 तक अपना आलेख अवश्य ई-मेल कर दें।
- आलेख कृतिदेव-10 या मंगल यूनिकोड में टंकित होने चाहिए।
- शोध पत्रों में संदर्भीकरण के लिए विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत नियम ही मान्य होंगे। नियम विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।
- संयुक्त शोध पत्र होने पर सभी लेखकों को पृथक-पृथक पंजीयन कराना अनिवार्य होगा।
- आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों द्वारा की जाएगी।

उत्तरापेक्षी :

श्री प्रभुलाल डेंडोर
अध्यक्ष, श्री मेवाड़-वागड़-मालवा जनजाति विकास संस्थान, उदयपुर

प्रो. माधव हाड़ा
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
09414325302

डॉ. मन्नालाल रावत
संगोष्ठी संयोजक

डॉ. नवीन नन्दवाना
आयोजन सचिव
09828351618

डॉ. नीतू परिहार 09413864055
डॉ. आशीष सिसोदिया 09414851055
डॉ. राजकुमार व्यास 09928788995
डॉ. नीता त्रिवेदी 09950960999

E-mail : seminartri2016@gmail.com Website : www.mlsu.ac.in

राष्ट्रीय संगोष्ठी

समकालीन आदिवासी विमर्श : सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य

7-8 अक्टूबर, 2016

आयोजक
हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान-313001
एवं
श्री मेवाड़-वागड़-मालवा जनजाति विकास संस्थान
उदयपुर, राजस्थान

E-mail : seminartri2016@gmail.com Website : www.mlsu.ac.in

महोदय/महोदया

आपको सूचित करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान) एवं श्री मेवाड़-वागड़-मालवा जनजाति विकास संस्थान, उदयपुर (राजस्थान) के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक : 7-8 अक्टूबर, 2016 को 'समकालीन आदिवासी विमर्श : सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। आप इस संगोष्ठी में सादर आमंत्रित हैं।

भारतीय समाज व्यवस्था विविध जातियों के संगम से बनी है। समाज निर्माण की प्रक्रिया में जंगलों, वनों एवं गिरिकुहरों में जीवनयापन करने वाले आदिवासी समाज का भी उतना ही योगदान है, जितना कि भव्य शहरों में वैभव सम्पन्न जीवन जीने वाले लोगों का। आज आदिवासी शब्द सुनते ही वे लोग याद आते हैं, जो जंगलों एवं पहाड़ों से घिरे विशिष्ट प्रकार के वातावरण में, विशिष्ट भाषा एवं जीवन पद्धति के माध्यम से अपने धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित किए हुए हैं। विषम स्थितियों में जंगल में जीवनयापन करने वाले ये लोग वास्तव में वनप्रांतर के अनाभिषिक्त राजा हैं, जिन्हें भारतीय संविधान अनुसूचित जनजाति का दर्जा देता है। आदिवासी शब्द किसी क्षेत्र विशेष के मूल निवासियों के लिए प्रयुक्त होता है, जो कि आदिकाल से ही किसी विशिष्ट स्थल पर निवास करते रहे हैं। अपनी जरूरतों के लिए ये लोग बाजार - व्यवस्था पर कम से कम आश्रित रहे हैं तथा इनकी धार्मिक एवं सामाजिक व्यवस्था प्रकृति से अधिकाधिक जुड़ाव रखती है। देश में संवैधानिक प्रक्रिया के अनुसार विस्तृत विकास प्रक्रिया प्रगति की राह पर है फिर भी अधिकांश आदिवासी लोग जीवन की मूलभूत सुविधाओं से भी वंचित हैं।

इतना सब सहते हुए भी ये आदिवासी लोग भारत के जिस किसी कोने में बसे हों, अपनी संस्कृति को संजोये हुए हैं। ये लोग अपने मौलिक आचार-विचार, विश्वासों, रीति-रिवाज और परम्पराओं की विरासत में ऐसे तत्वों को धारण किए हुए हैं, जो राष्ट्र की मुख्य धारा के प्रेरक हैं और उसे मूलाधार प्रदान करते हैं। आज चहुँओर आदिवासी विमर्श की चर्चा है। साहित्यकार और समाजविज्ञानी दोनों ही इनके मुद्दों पर अपने-अपने नजरिये से चिंतन कर रहे हैं। इस संगोष्ठी के माध्यम से आदिवासी जीवन के सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य, उनकी भक्ति चेतना, लोक संस्कृति के साथ-साथ उनके जीवन से जुड़ी नवीन चुनौतियों एवं सांस्कृतिक प्रेरक तत्वों व उनके युक्ति-युक्त समाधान पर विचार-मंथन किया जाएगा।

सत्र विवरण -

- समकालीन लेखन और आदिवासी जीवन
- आदिवासी समाज की भक्ति चेतना : परम्परा और प्रेरणा
- समकालीन आदिवासी विमर्श : सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य
- वैश्वीकरण, समाज और आदिवासी संस्कृति

उपविषय -

- आदिवासी साहित्य : स्वरूप, विस्तार और संभावनाएँ
- आदिवासी लेखन : स्थिति, गति और चुनौतियाँ
- समकालीन परिदृश्य और आदिवासी संस्कृति
- आदिवासी प्रथागत कानून : विविध आयाम
- आदिवासी साहित्य में स्त्री चिंतन के स्वर
- वैश्वीकरण और आदिवासी
- आदिवासी समाज की भक्ति चेतना के विविध आयाम
- आदिवासी गीत, संगीत एवं राष्ट्रीय चेतना
- आदिवासी जीवन : लोक विश्वास और प्रेरक परम्पराएँ
- आदिवासी संत और भक्त
- आदिवासी जीवन और अस्तित्व का संकट : विविध आयाम
- आदिवासी जीवन और जीवन दर्शन
- आदिवासी भाषा और पहचान
- समकालीन साहित्य में आदिवासी जीवन : चिंतन और चुनौतियाँ
- राजस्थान की आदिवासी जातियाँ : स्थिति और नवीन चुनौतियाँ
- शिक्षा, नगरीकरण और विकास प्रक्रिया एवं आदिवासी संस्कृति
- आदिवासी कहावतों में प्रेरक तत्त्व
- राजस्थान का आदिवासी लेखन : दशा और दिशा
- मेवाड़, वागड़ और मालवा क्षेत्र का आदिवासी जीवन और परिवेश
- आदिवासी जीवन के विकास हेतु संस्थागत प्रयास
- राष्ट्रीय-सांस्कृतिक आयोजनों में आदिवासी भागीदारी
- मेवाड़, वागड़ और मालवा क्षेत्र के आदिवासी जीवन में संस्कृति, इतिहास और भक्तिधारा

पंजीयन प्रपत्र

हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)
एवं
श्री मेवाड़-वागड़-मालवा जनजाति विकास संस्थान, उदयपुर (राजस्थान)

राष्ट्रीय संगोष्ठी
समकालीन आदिवासी विमर्श : सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य
7-8 अक्टूबर, 2016

नाम: .....

पद: .....

संस्था : .....

.....

.....

पत्र व्यवहार का पता : .....

.....

.....

मोबाइल नं. ..... ई-मेल : .....

शोध पत्र का शीर्षक : .....

.....

पंजीयन शुल्क : राशि ..... नकद/ बैंक जमा/चेक/

डी.डी. नं. ..... दिनांक .....

बैंक का नाम .....

आवास व्यवस्था चाहिए : हाँ/नहीं .....

उदयपुर पहुँच की दिनांक व समय .....

घोषणा

मैं शपथपूर्वक घोषणा करता/करती हूँ कि प्रस्तुत शोध पत्र मौलिक, अन्यत्र अपठित एवं अप्रकाशित है। मैं आपको इसके प्रकाशन की स्वीकृति प्रदान करता/करती हूँ।

हस्ताक्षर